आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 3/सितंबर 2026

Received: 13/09/2026; Accepted: 02/10/2026; Published: 10/10/2026

लेख

AI युग में भारतीय भाषाओं का भविष्य

प्रो.प्रतिभा मुदलियार

प्रो.प्रतिभा मुदलियार, AI युग में भारतीय भाषाओं का भविष्य, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 3/सितंबर 2026**,(352 -359)

https://doi.org/10.5281/zenodo.23926124

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

इक्कीसवीं सदी का तीसरा दशक मानव सभ्यता के इतिहास में कृत्रिम बुद्धिमत्ता)Artificial Intelligence—AI) के तीव्र विस्तार के लिए जाना जाएगा। विशेष रूप से जेनरेटिव AI ने लेखन, अनुवाद, शिक्षा, पत्रकारिता, शोध, प्रशासन, मनोरंजन और रोजगार की दुनिया को तेजी से बदलना शुरू कर दिया है। कुछ ही वर्षों में ऐसी तकनीकें सामान्य उपयोग का हिस्सा बन गई हैं, जो मनुष्य की भाषा को समझने, उसका विश्लेषण करने और नई भाषा उत्पन्न करने में सक्षम हैं। इस परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि AI का भविष्य केवल अंग्रेजी जैसी वैश्विक भाषाओं तक सीमित नहीं रहेगा; भारतीय भाषाएँ भी इस परिवर्तन के केंद्र में हैं।

वास्तव में इसका उत्तर किसी एक शब्द में नहीं दिया जा सकता। AI भारतीय भाषाओं के लिए रोजगार, ज्ञानविस्तार और वैश्विक पहुँच के अभूतपूर्व अवसर पैदा कर रहा है-, लेकिन साथ ही भाषायी

असमानता, डिजिटल संसाधनों की कमी, रोजगार के पारंपरिक स्वरूप में बदलाव और सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व जैसी गंभीर चुनौतियाँ भी सामने ला रहा है। इसलिए प्रश्न केवल यह नहीं है कि AI भारतीय भाषाओं को कितना प्रभावित करेगा, बल्कि यह भी है कि भारतीय समाज AI के लिए अपनी भाषाओं को कितना समृद्ध डिजिटल संसाधन उपलब्ध कराता है।

भाषा हमारा पहला सॉफ्ट :वेयर

मनुष्य की बौद्धिक यात्रा भाषा से शुरू होती है। भाषा केवल विचारों को दूसरों तक पहुँचाने का माध्यम नहीं है; वह विचारों को व्यवस्थित करने, अनुभवों को अर्थ देने और ज्ञान को पीढ़ीपीढ़ी -दर-पह" हस्तांतरित करने का माध्यम भी है। इस अर्थ में भाषा को मनुष्य काला सॉफ्टवेयरकहा जा सकता है। "

हम जिस भाषा में सोचते हैं, उसी में अपने अनुभवों को वर्गीकृत और व्यक्त करते हैं। शब्द केवल शब्द नहीं होते; उनके पीछे इतिहास, संस्कृति, सामाजिक अनुभव और सामूहिक स्मृति होती है। इसलिए किसी भाषा की शक्ति केवल उसके बोलने वालों की संख्या से निर्धारित नहीं होती। उसकी वास्तविक शक्ति इस बात से भी तय होती है कि वह ज्ञान, विज्ञान, तकनीक, साहित्य, शिक्षा और रोजगार की दुनिया में कितनी सक्रिय है।

AI के संदर्भ में भाषा का महत्व और बढ़ जाता है। बड़े भाषा मॉडल)Large Language Models) जिस मात्रा और गुणवत्ता के भाषायी डेटा पर प्रशिक्षित होते हैं, उसका प्रभाव उनके प्रदर्शन पर पड़ता है। यदि किसी भाषा में पर्याप्त डिजिटल सामग्री उपलब्ध नहीं है, तो उस भाषा में AI की क्षमता भी सीमित हो सकती है।

यहीं भारतीय भाषाओं के सामने एक महत्वपूर्ण अवसर उपस्थित होता है। यदि हिंदी, मराठी, गुजराती, बंगाली, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, पंजाबी, असमिया, उड़िया और अन्य भारतीय भाषाओं में उच्च गुणवत्ता की डिजिटल सामग्री का निर्माण होता है, तो ये भाषाएँ केवल सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के माध्यम नहीं रहेंगी, बल्कि AI आधारित ज्ञानअर्थव्यवस्था की सक्रिय भाषाएँ बन सकती हैं।-

सांस्कृतिक पहचान से आर्थिक भाषा तक

लंबे समय तक भारतीय भाषाओं की चर्चा मुख्यतः साहित्य, संस्कृति और पहचान के संदर्भ में की जाती रही है। यह दृष्टि आज भी महत्वपूर्ण है, लेकिन AI और डिजिटल अर्थव्यवस्था ने भाषा का एक नया आर्थिक पक्ष सामने रखा है।

आज भाषा का उपयोग ईकॉमर्स-, डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन शिक्षा, सरकारी सेवाओं, स्वास्थ्य-सूचना, ग्राहक सहायता, मनोरंजन और डिजिटल मार्केटिंग में हो रहा है। भारत जैसे बहुभाषी देश में

करोड़ों लोग इंटरनेट का उपयोग अपनी मातृभाषा या भारतीय भाषाओं में करना चाहते हैं। इसका अर्थ है कि भारतीय भाषाएँ विशाल डिजिटल उपभोक्ता बाजार से जुड़ रही हैं।

हिंदी इस परिवर्तन का एक प्रमुख उदाहरण है। हिंदी का व्यापक सामाजिक आधार उसे डिजिटल सेवाओं, मीडिया, शिक्षा और AI आधारित उत्पादों के लिए महत्वपूर्ण बनाता है। लेकिन यही बात अन्य भारतीय भाषाओं के लिए भी लागू होती है। आने वाले समय में भाषा का मूल्य केवल इस आधार पर नहीं होगा कि कितने लोग उसे बोलते हैं, बल्कि इस आधार पर भी होगा कि वह डिजिटल दुनिया में कितनी उपयोगी, उपलब्ध और तकनीकी रूप से समर्थ है।

इस प्रकार भारतीय भाषाएँ धीरेका रूप भी "आर्थिक पूँजी" साथ-के साथ "सांस्कृतिक पूँजी" धीरे-ग्रहण कर रही हैं।

AI और रोजगार खतरा नहीं :, केवल परिवर्तन

AI के आने से रोजगार को लेकर चिंता स्वाभाविक है। भाषा के क्षेत्र में यह चिंता विशेष रूप से दिखाई देती है। प्रारंभिक स्तर के लेखन, सामान्य अनुवाद, सामग्री का सारांश, प्रूफरीडिंग और दोहराव वाले कुछ कार्य अब AI की सहायता से तेजी से किए जा सकते हैं। इसका अर्थ है कि कुछ पारंपरिक कार्यों की मांग और प्रकृति बदल सकती है।

लेकिन तकनीकी परिवर्तन का इतिहास बताता है कि रोजगार केवल समाप्त नहीं होते; उनका स्वरूप भी बदलता है और नए प्रकार के काम पैदा होते हैं। भारतीय भाषाओं के क्षेत्र में यही प्रक्रिया दिखाई दे रही है।

AI डेटा एनोटेशन, भाषा डेटा निर्माण, प्रॉम्प्ट डिजाइन, चैटबॉट प्रशिक्षण, मशीन ट्रांसलेशन मूल्यांकन, स्पीच डेटा संग्रह, ट्रांसक्रिप्शन, लोकलाइजेशन, कंटेंट मॉडरेशन, AI आउटपुट का भाषायी संपादन और सांस्कृतिक संदर्भों की जाँच जैसे अनेक नए कार्य उभर रहे हैं।

यहाँ एक महत्वपूर्ण परिवर्तन समझना आवश्यक है। भविष्य का भाषा विशेषज्ञ केवल व्याकरण जानने वाला व्यक्ति नहीं होगा। उसे भाषा के साथ तकनीक की समझ भी विकसित करनी होगी। उसे यह समझना होगा कि AI मॉडल कैसे काम करते हैं, प्रॉम्प्ट कैसे तैयार किए जाते हैं, डेटा की गुणवत्ता कैसे जाँची जाती है और मशीन द्वारा तैयार सामग्री में तथ्यात्मक तथा सांस्कृतिक त्रुटियों की पहचान कैसे की जाती है।

इसलिए आने वाले समय में संयोजन बन सकता है।-एक महत्वपूर्ण कौशल "तकनीक + भाषा"

विकिपीडिया और डिजिटल ज्ञान का "आपूर्ति संकट"

भारतीय भाषाओं के भविष्य की चर्चा करते समय डिजिटल सामग्री का प्रश्न सबसे महत्वपूर्ण है। इंटरनेट पर किसी भाषा की उपस्थिति केवल इस बात से निर्धारित नहीं होती कि कितने लोग उस भाषा को बोलते हैं। यह भी देखना पड़ता है कि उस भाषा में कितना ज्ञान डिजिटल रूप में उपलब्ध है।

विकिपीडिया इसका एक उपयोगी उदाहरण प्रस्तुत करता है। हिंदी विकिपीडिया जैसे मंचों पर पाठकों की संख्या बहुत बड़ी हो सकती है, लेकिन सक्रिय संपादकों की संख्या उसके मुकाबले काफी कम है। परिणामस्वरूप एक बड़ा दिखाई देता है। "क्रिएटर बेस" और अपेक्षाकृत छोटा "रीडर बेस"

इसे भाषा का डिजिटल कहा जा सकता है। मांग बहुत बड़ी है "आपूर्ति संकट", लेकिन गुणवत्तापूर्ण डिजिटल सामग्री की आपूर्ति पर्याप्त नहीं है।

यह समस्या केवल विकिपीडिया की समस्या नहीं है। यही स्थिति अनेक डिजिटल ज्ञानसंसाधनों-, स्थानीय इतिहास, लोक साहित्य, क्षेत्रीय शब्दावलियों, वैज्ञानिक सामग्री, शैक्षणिक संसाधनों और स्थानीय सांस्कृतिक दस्तावेजों के संदर्भ में भी दिखाई दे सकती है।

यदि भारतीय भाषाओं में ज्ञान का विशाल भंडार डिजिटल रूप में उपलब्ध नहीं होगा, तो AI मॉडल भी उस ज्ञान को प्रभावी ढंग से सीख और प्रस्तुत नहीं कर पाएँगे। परिणामस्वरूप भारतीय भाषाओं में AI की उपयोगिता सीमित हो सकती है या वह अंग्रेजीर अत्यधिक निर्केंद्रित ज्ञान प-भर रह सकता है।

"रीडरबनने की आवश्यकता "क्रिएटर" से "

डिजिटल युग का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत हैइंटरनेट केवल वह नहीं है जो हम पढ़ते हैं—; इंटरनेट वह भी है जो हम बनाते हैं।

आज भारतीय भाषाओं के सामने सबसे बड़ी आवश्यकता डिजिटल सृजन की है। हमें अपने साहित्य, इतिहास, दर्शन, विज्ञान, लोकज्ञान, लोककथाओं, जीवनी, कला, संगीत, कृषि ज्ञान और स्थानीय अनुभवों को डिजिटल रूप में संरक्षित करना होगा।

यह कार्य केवल विश्वविद्यालयों या सरकार की जिम्मेदारी नहीं हो सकता। इसमें शिक्षक, विद्यार्थी, लेखक, पत्रकार, शोधकर्ता, तकनीकी विशेषज्ञ, विकिपीडिया संपादक, अनुवादक और सामान्य इंटरनेट उपयोगकर्ता भी योगदान दे सकते हैं।

एक विद्यार्थी अपने क्षेत्र के किसी ऐतिहासिक स्थल पर हिंदी या अपनी मातृभाषा में विश्वसनीय लेख लिख सकता है। कोई शिक्षक स्थानीय लोकसाहित्य को डिजिटल रूप दे सकता है। कोई शोधकर्ता पुराने ग्रंथों का डिजिटलीकरण कर सकता है। कोई तकनीकी विशेषज्ञ भारतीय भाषा के लिए ओपन डेटा तैयार कर सकता है।

छोटेसंसाधन का निर्माण कर सकते हैं।-छोटे ऐसे प्रयास मिलकर एक विशाल डिजिटल भाषा-

सांस्कृतिक विलोपन का जोखिम

यदि किसी भाषा के डिजिटल संसाधन कमजोर हैं, तो AI आधारित दुनिया में उसका प्रतिनिधित्व भी कमजोर हो सकता है। यहाँ का प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है। "सांस्कृतिक विलोपन"

AI भाषा उत्पन्न कर सकता है, लेकिन वह अपने आप यह तय नहीं कर सकता कि किसी समुदाय के लिए कौन सा सांस्कृतिक संदर्भ-महत्वपूर्ण है। किसी लोककथा के पीछे छिपे सामाजिक अर्थ, किसी मुहावरे की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, किसी क्षेत्रीय शब्द का भावात्मक अर्थ या किसी परंपरा की स्थानीय विशिष्टता केवल शब्दकोश से पूरी तरह नहीं समझी जा सकती।

इसलिए भारतीय भाषाओं का डिजिटल संरक्षण केवल डेटासंग्रह की तकनीकी प्रक्रिया नहीं है। यह - सांस्कृतिक संरक्षण का कार्य भी है।

यदि हम अपनी भाषाओं का डिजिटल ज्ञान स्वयं तैयार नहीं करेंगे, तो हमारे बारे में उपलब्ध डिजिटल ज्ञान अन्य भाषाओं में मौजूद सीमित स्रोतों पर निर्भर रह सकता है। इससे अधूरापन, संदर्भगत त्रुटियाँ और प्रतिनिधित्व की समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

AI : मानवीय श्रम का प्रतिस्थापन नहीं, पुनर्संयोजन

AI को लेकर एक सकारात्मक दृष्टि यह भी है कि वह मनुष्य को दोहराए जाने वाले मानसिक कार्यों से मुक्त कर सकता है। जिस प्रकार औद्योगिक मशीनों ने कई प्रकार के शारीरिक श्रम को कम किया, उसी प्रकार AI लेखन, अनुवाद, वर्गीकरण और डेटासंबंधी अनेक दोहराव वाले कार्यों को सरल बना सकता है।-

लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि मानव की भूमिका समाप्त हो जाएगी। इसके विपरीत, मानवीय भूमिका अधिक जटिल और महत्वपूर्ण हो सकती है।

AI पाठ बना सकता है; लेकिन उसके अर्थ, संदर्भ और सांस्कृतिक उपयुक्तता की अंतिम जिम्मेदारी मनुष्य की रहनी चाहिए। AI किसी विषय पर हजारों शब्द उत्पन्न कर सकता है, लेकिन यह जरूरी नहीं कि वे सभी तथ्यात्मक रूप से सही हों या स्थानीय संदर्भ के अनुरूप हों।

यहीं भाषा विशेषज्ञ की भूमिका सामने आती है। भविष्य में भाषा विशेषज्ञ केवल नहीं "लेखक", बल्कि मानव और मशीन के बीच सांस्कृतिक मध्यस्थ भी हो सकता है।

भारतीय भाषाओं के लिए आवश्यक कौशल

AI युग में भारतीय भाषाओं के विद्यार्थियों के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता कौशलों के पुनर्संयोजन की है। हिंदी या किसी अन्य भारतीय भाषा का अध्ययन करने वाले विद्यार्थी को भाषा की मूल दक्षता के साथ तकनीकी दक्षता भी प्राप्त करनी चाहिए।

कुछ महत्वपूर्ण कौशल हैं—

1. भाषायी दक्षता व्याकरण —, शब्दावली, शैली, लेखन और संपादन।

2. डिजिटल साक्षरता —इंटरनेट, डिजिटल प्रकाशन और ऑनलाइन ज्ञानसंसाधनों का उपयोग।-

3. AI साक्षरता जेनरेटिव —AI और भाषा मॉडलों की बुनियादी समझ।

4. प्रॉम्प्ट डिजाइन —AI से प्रभावी और संदर्भानुकूल परिणाम प्राप्त करने की क्षमता।

5. डेटा एनोटेशन भाषा डेटा को व्यवस्थित और वर्गीकृत —करने का कौशल।

6. लोकलाइजेशन वैश्विक सामग्री को भारतीय भाषायी और सांस्कृतिक संदर्भ में ढालना। —

7. मशीन अनुवाद मूल्यांकन —AI द्वारा किए गए अनुवाद की गुणवत्ता जाँचना।

8. फैक्ट — चेकिंग और संपादन-AI-निर्मित सामग्री की तथ्यात्मक जाँच।

9. बहुभाषिक क्षमता एक —से अधिक भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी के बीच काम करने की क्षमता।

10. सांस्कृतिक समझ भाषा के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ को समझना। —

इन कौशलों का विकास विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में भी होना चाहिए। हिंदी विभागों और अन्य भाषा विभागों को तकनीकी संस्थानों के साथ सहयोग करके ऐसे पाठ्यक्रम विकसित करने चाहिए जो साहित्यिक ज्ञान और तकनीकी दक्षता के बीच सेतु का काम करें।

अवसर केवल हिंदी के लिए नहीं

भारतीय भाषाओं का भविष्य केवल हिंदी के भविष्य का प्रश्न नहीं है। भारत की भाषायी विविधता उसकी सबसे बड़ी सांस्कृतिक संपदाओं में से एक है। AI इस विविधता को डिजिटल रूप में संरक्षित करने का अवसर दे सकता है। कम संसाधन वाली भाषाओं के लिए स्पीचटेक्स्ट-टू-, टेक्स्टस्पीच-टू-, मशीन अनुवाद और डिजिटल शब्दकोश जैसी तकनीकें महत्वपूर्ण हो सकती हैं। यदि स्थानीय भाषाओं में शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य, प्रशासन और रोजगार संबंधी जानकारी उपलब्ध होती है, तो डिजिटल सेवाओं की पहुँच भी अधिक व्यापक हो सकती है। इसलिए भारतीय भाषाओं की AI यात्रा का लक्ष्य केवल बड़ी भाषाओं को तकनीकी रूप से सक्षम बनाना नहीं होना चाहिए। छोटी और कमसंसाधन वाली भाषाओं को भी डिजिटल-दुनिया में स्थान मिलना आवश्यक है।

चुनौती से अवसर की ओर

AI भारतीय भाषाओं के सामने एक दोहरा प्रश्न रखता है। पहली चुनौती है—**क्या हमारी भाषाएँ पर्याप्त डिजिटल डेटा, तकनीकी संसाधन और प्रशिक्षित मानव संसाधन विकसित कर पाएँगी?** दूसरा प्रश्न है—**क्या हम इस तकनीकी परिवर्तन को रोजगार और ज्ञानसृजन के अवसर में बदल पाएँगे-?** इन दोनों प्रश्नों का उत्तर हमारे सामूहिक प्रयासों पर निर्भर करेगा।

सरकारें भाषा तकनीक के लिए नीतियाँ और संसाधन उपलब्ध करा सकती हैं। विश्वविद्यालय शोध और प्रशिक्षण का केंद्र बन सकते हैं। उद्योग AI आधारित भारतीय भाषा उत्पाद विकसित कर सकता है। नागरिक समाज डिजिटल अभिलेखन और भाषा संरक्षण में योगदान कर सकता है। और सामान्य नागरिक अपनी भाषा में उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री बनाकर इस प्रक्रिया में भाग ले सकता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भारतीय भाषाओं को तकनीक के सामने खड़ा करके नहीं, बल्कि तकनीक के साथ जोड़कर देखना होगा।

निष्कर्ष

AI युग भारतीय भाषाओं के लिए केवल चुनौती नहीं है और केवल अवसर भी नहीं। यह एक ऐतिहासिक संक्रमण है, जिसमें दोनों संभावनाएँ साथसाथ मौजूद हैं।-

यदि हम केवल यह सोचते रहें कि AI हमारी नौकरियाँ छीन लेगा, तो हम उसके नए अवसरों को पहचानने से चूक सकते हैं। और यदि हम यह मान लें कि AI अपने आप हमारी भाषाओं को डिजिटल रूप से समृद्ध कर देगा, तो हम अपनी सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी भूल जाएँगे। AI को भारतीय भाषाओं के लिए उपयोगी बनाने के लिए भारतीय भाषाओं में ज्ञान का निर्माण करना होगा। हमें अपने साहित्य, इतिहास, विज्ञान, लोकज्ञान और समकालीन अनुभवों को डिजिटल रूप देना होगा। हमें पाठक होने के साथसाथ -

निर्माता बनना होगा। हमें भाषा के विद्यार्थियों को केवल पारंपरिक रोजगार के लिए नहीं, बल्कि AI-समर्थित नई भाषा अर्थव्यवस्था के लिए तैयार करना होगा।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि AI को मानव अर्थनिर्माण का विकल्प नहीं-, बल्कि सहायक उपकरण मानना होगा। मशीन शब्द उत्पन्न कर सकती है; मनुष्य संदर्भ देता है। मशीन वाक्य बना सकती है; मनुष्य अनुभव और अर्थ देता है। मशीन अनुवाद कर सकती है; मनुष्य सांस्कृतिक संवेदना सुनिश्चित करता है। इसलिए भारतीय भाषाओं का भविष्य केवल AI तय नहीं करेगा। भविष्य इस बात से तय होगा कि हम AI के युग में अपनी भाषाओं के लिए कितना ज्ञान, कितना डेटा, कितनी तकनीक और कितनी रचनात्मक ऊर्जा उपलब्ध कराते हैं। आज आवश्यकता केवल अपनी भाषा को बचाने की नहीं, बल्कि उसे डिजिटल भविष्य की सक्रिय भाषा बनाने की है।

इंटरनेट केवल वह नहीं है जो हम पढ़ते हैं; इंटरनेट वह है जो हम बनाते हैं।

अतः यह समय भारतीय भाषाओं के केवल संरक्षण का नहीं, बल्कि उनके डिजिटल पुनर्निर्माण, ज्ञानसृजन और वैश्विक विस्तार का समय है। यदि हम पाठक से निर्माता-, उपभोक्ता से सृजनकर्ता और पारंपरिक भाषाप्रौद्योगिकी की ओर यात्रा कर सकें-ज्ञान से भाषा-, तो AI भारतीय भाषाओं के लिए संकट का कारण बनने के बजाय उनके विकास का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है। यह हमारी डिजिटल धरोहर के निर्माण का समय है और इस धरोहर की भाषा भारतीय भाषाएँ भी होंगी।

****